By:- Dr. Shailesh Kumar
dept. of economics
Raja Singh College Siwan

ECONOMICS

B.A. Part One
Paper Ist

16.5.20

आर्थिक सिद्धान्त में मान्यताओं की प्रकृति कार्य एवं महत्व :-

Nature, role & Significance of assumption in economic theory

प्रकृति (nature)

आर्थिक सिद्धान्त कुछ मान्यताओं पर आधारित हैं जिन्हें मुख्यतः तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया है।

(i) मनोवैज्ञानिक मान्यताएं (Psychological assumption)

ये मान्यताएं व्यक्तिगत मानव व्यवहार के बारे में हैं। वे व्यक्तियों के उपभोक्ताओं और उत्पादकों के रूप में विवेकी व्यवहार से संबद्ध हैं। उपभोक्ताओं के रूप में उनमें परिवार, गृहस्थी और व्यक्ति शामिल हैं और उत्पादकों के रूप में, उनमें व्यापारी, उद्यमी और फर्में सम्मिलित हैं। एक विवेकी उपभोक्ता का उद्देश्य अपनी दी हुई आय और उसका वस्तुओं और सेवाओं पर व्यय से अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करना है। दूसरी ओर एक विवेकी उत्पादक का उद्देश्य अपने लाभों को अधिकतम करना है। विवेकिता की मान्यताएँ व्यष्टि आर्थिक सिद्धान्त का आधार हैं। जिसमें विवेकी उपभोक्ता और उत्पादक मार्केट प्रणाली द्वारा पारस्परिक क्रिया करते हैं। बामोल और ब्लिंडर के अनुसार "अर्थशास्त्र में विवेकी व्यवहार को उन निर्णयों की विशेषता के रूप में परिभाषित किया जाता है जो निर्णय लेने वालों को अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सहायता करने में प्रभावी हैं, चाहे वे जो भी हों, उद्देश्य स्वयं (यहां तक कि वे स्वयं परस्पर विरोधी न हों) कभी भी विवेकी या अविवेकी नहीं समझे जाते।"

(ii) संस्थानिक मान्यताएँ (Institutional assumption)

आर्थिक सिद्धान्त में ये मान्यताएँ सामाजिक राजनैतिक और आर्थिक संस्थाओं से संबद्ध हैं। सभी आर्थिक सिद्धान्तों को एक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की मान्यता पर विकसित किया गया है-

P.T.O

Scanned by CamScanner

जिसमें उत्पादन और वितरण के साधनों का निजी स्वामित्व होता है। और उनका निजी लाभ के लिए प्रयोग किया जाता है। वे स्थिर सरकार और कुछ सामाजिक आर्थिक संस्थाओं की मान्यताएँ लेते है। जिनमें निजी संपत्ति, निजी-स्वार्थ, आर्थिक उदारवाद या अवैध नीति, प्रतियोगिता और कीमत प्रणाली सम्मिलित है। सरकार का कार्य "खेल के नियमों" को मार्केट में लागू करना है।

(iii) संरचनात्मक मान्यताएँ (Structural assumptions) इन मान्यताओं का संबंध अर्थव्यवस्था की प्रकृति और भौतिक बनावट एवं प्रौद्योगिकी की स्थिति से है। अल्प काल में, आर्थिक सिद्धान्त दिए हुए संसाधनों और प्रौद्योगिकी मान्यताओं पर आधारित है। परन्तु दीर्घकाल में श्रम पूँजी और अन्य साधन तथा प्रौद्योगिकी कुछ सिद्धान्तों में परिवर्तित होते मान लिए जाते हैं।

मान्यताओं का कार्य और महत्व (Role and Significance of assumption

आर्थिक सिद्धान्त में मान्यताओं के कार्य के बारे में भिन्न विचार पाये जाते हैं। एक ओर क्लासिकी और नवक्लासिकी अर्थशास्त्री है तो दूसरी ओर फ्रिडमैन, मैक्लप कूपमेन्स आदि हैं। मान्यताओं को उनके निहित अर्थों की वास्तविक जगत में तथ्यों के साथ तुलना करके परोक्ष रूप में टैस्ट किया जाता है। जब कुछ मान्यताओं पर आधारित सिद्धान्तों को तथ्य गलत साबित करते हैं तो तथ्य उन मान्यताओं को परोक्षतया खण्डित करते हैं।

फ्रीडमैन अपने निबंध the methodology of positive economic assumption 1953) में इस मत से सहमत नहीं होता। उसके अनुसार सिद्धान्त को उसकी मान्यताओं के "यथार्थवाद" (realism) पर आँका नहीं जा सकता। बल्कि, अर्थशास्त्र में एक अच्छे सिद्धान्त की प्रामाणिकता (Validity) उसकी "अविष्यसूचक शक्ति" (predictive power) और वास्तविक जगत के लिए उसके निहितार्थ हैं। वह दावा करता है कि मान्यताओं का यथार्थवाद असंगत (irrelevant) है क्योंकि यदि सिद्धान्त की सभी भविष्यवाणियों द्वारा स्थापित किया जाता है तो सिद्धान्त पूर्ण रूप से प्रमाणिक है।

P.T.O.

Scanned by CamScanner

फ्रीडमैन आर्थिक सिद्धान्त निर्माण में मान्यताओं की तीन भिन्न, यद्यपि संबंधित, निश्चित कार्यों की ओर संकेत करता है।

(a) एक सिद्धान्त को प्रस्तुत या वर्णन करने के लिए वे अक्सर किफायती होते हैं।

(b) वे कभी कभी एक परिकल्पना के परोक्ष टेस्ट को उसके निहित अर्थों द्वारा सुविधा प्रदान करते हैं। और

(c) वे कभी कभी स्थितियों का विशेष रूप से उल्लेख करने का सुविधाजनक माध्यम हैं। जिसके अन्तर्गत सिद्धान्त का सत्यापित होना संभावित है।

एक सिद्धान्त कुछ महत्वपूर्ण मान्यताओं के आधार पर निर्मित किया जाता है सामान्य तौर से, एक सिद्धान्त के निर्माण के लिए मान्यताओं का एक से अधिक सेट होता है। फ्रीडमैन के अनुसार, ऐसी मान्यताओं के बीच चुनाव निम्न तथ्यों के आधार पर किया जाता है।

(a) परिकल्पना को प्रस्तुत करने में किफायत, स्पष्टता और यथार्थता।

(b) परिकल्पना की प्रमाणिकता पर परोक्ष प्रमाण लाने की उसकी क्षमता।

(c) परिकल्पना के कुछ निहित अर्थों का सुझाव देकर जिनकी निरीक्षण द्वारा जाँच की जा सकती है या अन्य परिकल्पनाओं के साथ इसके संबंध लाते हुए जो संबद्ध तथ्यों के साथ व्यवहार करते हैं।

परन्तु इसमें कोई फर्क नहीं पड़ता कि क्या आर्थिक सिद्धान्त की मान्यताएं वास्तविक हैं या नहीं। महत्वपूर्ण बात है सिद्धान्त की भविष्यसूचक शक्ति। इस प्रकार फ्रीडमैन एक सिद्धान्त की भविष्यसूचक यथार्थता को उसकी प्रमाणिकता की केवल कसौटी मानता है। संन्यूलसन इसे फ्रीडमैन घुमाव कहते हैं। जिसका अर्थ है, जितनी अधिक अयथार्थिक मान्यताएँ उतना श्रेष्ठ सिद्धान्त।

एक महत्वपूर्ण और,

लाभदायक आर्थिक सिद्धान्त यह है कि व्यापारी अपने लाभों को अधिकतम करने का उद्देश्य रखते हैं, इसमें हम काफी सफलता के साथ कैसे प्रतिक्रिया करेंगे, इसलिए यह भिन्न आर्थिक नीतियों के प्रभावों में तुलना करने में बहुत उपयोगी है। जिन मान्यताओं पर लाभ अधिकतमकरण सिद्धान्त आधारित है, वे बहुत अयथार्थिक

P.T.O.

हैं। व्यापारी सीमांत और औसत लागतों एवं आगमों की गणना नहीं करते। वे यह जानने के लिए कि उनके लाभ अधिकतम हुए हैं या नहीं, जटिल युगपत समीकरणों को हल नहीं करते हैं। बल्कि वे मार्किट स्थितियों के बारे में अपनी कुशाग्र बुद्धि, निपुणता और ज्ञान पर या किसी व्यापारिक ज्ञेद पर निर्भर करते हैं। परन्तु लाभ अधिकतमकरण सिद्धान्त सही है।

लाभ अधिकतमकरण का यह सिद्धान्त सरल उपयोगी और लाभप्रद है। इसलिए केवल इस कारण से यह अप्रमाणिक नहीं है कि मान्यताएँ यथार्थिक और सत्य नहीं हैं। एक अर्थशास्त्री जो यथार्थवाद को ढूँढने का यत्न करता है वह नरिवाओं के जाल में फँस जाता है। यह जानने के लिए वह अपने लागतों की गणना कैसे करते हैं, और वे जो करते हैं सत्य है या नहीं और मान्यताओं के "यथार्थवाद" पर जाँच परिणामों को अपने निरीक्षणों के आधार पर प्रस्तुत करने हेतु, एक अर्थशास्त्री के लिए सभी व्यापारियों का साक्षात्कार करना असंभव है। फ्रीडमैन निष्कर्ष देते हैं कि एक सिद्धान्त या उसकी मान्यताएँ संभवतः पूर्णतया 'यथार्थिक' नहीं हो सकते। महत्वपूर्ण यह है कि एक सिद्धान्त अपनी मान्यताओं के यथार्थवाद के महत्व को अधिक बल देते हैं। उन्होंने भावी घटनाओं की ~~की~~ के आर्थिक भविष्यवाणी करने और उनको नियंत्रित करने ~~की~~ के आर्थिक सिद्धान्त की वास्तविक उद्देश्य को भुला दिया है। घटनाओं की भविष्यवाणी करने और ~~उनकी~~ उनको नियंत्रित करने की यह क्षमता एक सिद्धान्त को इसकी लाभदायकता प्रदान करती है न कि उसकी मान्यताओं की "यथार्थवाद"।